रात्रि क्लास 29/5/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

यहाँ सभी बैठे हैं। समझते हैं हम आत्माएँ हैं। बाप बैठा है। आत्म–अभिमानी हो बैठना इसको कहा जाता है। सभी नहीं ऐसे बैठे हैं कि हम आत्मा हैं, बाबा के सामने बैठे हैं। अभी बाबा ने याद दिलाया है स्मृति आवेगी। अटेन्शन देंगे। ऐसे बहुत हैं जिनकी ख़्यालात बाहर भागती है। यहाँ बैठे भी जैसे कान बंद हैं। यह बुद्धि बाहर में कहाँ–2 दौड़ती रहती है। बच्चे बाप की याद में बैठे हैं? कमाई कर रहे हैं? कमाई उनकी होती है जो याद में बैठे हैं। बहुतों का बुद्धियोग बाहर में रहता है। वह जैसे यात्रा में नहीं है। टाइम वेस्ट हो(ता) है। बाबा को देखने से भी बाबा याद पड़ेंगे। नम्बवार पुरुषार्थ अनुसार तो हैं ही। कोई–2 को पक्की टे(व) पड़ जाती है। हम आत्माएँ हैं। हम थोड़े ही हैं। बाप नॉलेजफुल है तो बच्चों में भी नॉलेज ठहरी। अभी वापस जाना है। चक्र पूरा होता है। अभी पुरुषार्थ करना है। बहुत गई थोड़ी रही... इम्तहान के दिनों (में) बहुत ध्यान देते हैं। यहाँ भी जब समय नाज़ुक देखेंगे। आसार देखते रहेंगे तो फिर पुरुषार्थ को लग पड़ेंगे। ज़ोर से याद करने लग पड़ेंगे। समझेंगे नहीं तो हम नापास हो जावेंगे। पद भी बहुत कमती हो जावेगा। ..... यूँ तो पुरुषार्थ चलता ही रहता है। देह अभिमान कारण विकर्म होंगे। इसको सौणा डण्ड हो जाता है; क्योंकि हमारी निंदा कराते हैं। ऐसा कर्म न करना चाहिए जो बाप का नाम बदनाम हो; इसलिए गाते हैं सदगुरू के निन्दक (ठौ)र न पाये। ठौर माना बादशाही। पढ़ाने वाला भी बाप है। और कहाँ भी सतसंग में एम–ऑबजेक्ट होती नहीं सिवाय तुम्हारे। यह है तुम्हारा राजयोग। और कोई ऐसे मुख से कह न सके, हम राजयोग सिखलाते हैं। वह तो समझते हैं शान्ति में ही सुख है। वहाँ तो न सुख की बात, न दुःख की बात है। शान्ति ही शान्ति है। फिर समझा जाता है इनकी तकदीर कम है। सबसे तकदीर ऊँची उनकी है जो सबसे पहले–2 पार्ट बजाने आते हैं। वहाँ उनको यह ज्ञान नहीं रहता। वहाँ संकल्प नहीं चलेगा।

बच्चे जानते हैं हम सभी अवतार लेते हैं। भिन्न–2 नाम–रूप में (आये) हैं। यह ड्रामा है ना। हम आत्माएँ शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं। कैसे पार्ट बजाते हैं वह सारा राज़ बाप ही समझाते हैं। तुम बच्चों को अन्दर में अति इन्द्रिय सुख रहता है। अन्दर में खुशी रहती है। कहेंगे यह देही अभिमानी है। बाप समझाते भी हैं तुम स्टूडेन्ट हो। जानते हो हम देवता स्वर्ग़ के मालिक बनने वाले हैं। सिर्फ़ ..... भी नहीं। हम विश्व के मालिक बनने वाले हैं। यह अवस्था तब रहेगी जब कर्मातीत अवस्था रहेगी। ड्रा(मा)प्लेन अनुसार होनी है ज़रूर। तुम समझते हो हम ईश्वरीय परिवार के हैं। स्वर्ग़ की बादशाही मिलनी है ..... जो सर्विस बहुत करेंगे उनको ही ऊँच पद मिलेगा। हम कम पद पावेंगे यह अन्दर में रहेगा। जो जास्ती (सर्विस) करते हैं, बहुतों का कल्याण करते हैं तो ज़रूर ऊँच पद मिलेगा।

बाबा ने समझाया है यह योग की बैंक यहाँ हो सकती है। बाहर सेन्टर पर ऐसे नहीं कह सकते हैं 4 बजे आना, निष्ठा में बैठना है। नहीं। सेन्टर (पर) रहने वाले भल बैठें। बाहर वाले को भूले–चूके भी कहना नहीं है। समय बड़ा ख़राब है। यह यहाँ के लिए ठीक है। घर में ही बैठे हैं। वहाँ तो बाहर से आना पड़ता है। यह यहाँ के लिए है सिर्फ़। बुद्धि में ज्ञान की धारणा होनी चाहिए। हम आत्मा हैं। उनका यह अकाल तख़्त है। हेर पड़ जानी चाहिए। हम भाई–2 हैं। भाई–2 से बात करते हैं। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हों। बाप बच्चों को समझाते हैं, जो समझते हैं और समझा सकते हैं वह सर्विस पर निक(लते) रहो। धन दिये धन ना खुटे। यह अविनाशी ज्ञान रत्न है। भक्ति(कल)ट अलग है, ज्ञान अलग है। ज्ञान एक ही बाप से मिलता है। भक्ति जन्म–जन्मांतर की जाती है। बाप कहते हैं हम तो एक ही बार आते हैं सबकी सद्गति (करने)। यहाँ बच्चों को बहुत अच्छा चांस है। डर की बात ही नहीं। कोई बन्धन नहीं। दुनियां में तो कितना हंगामा लगा पड़ा है। कितने असुर हैं। यहाँ तो डर की बात नहीं। कोई भी टाइम मुकर्रर कराओ बाप तो आ सकते हैं। कहते हैं मैं हूँ हुकुम का बन्दा। सभी को सद्गति देने वाला। तुमने हुकुम किया है ना हे पतित–पावन आओ। बाप ही(की) यही ड्यूटी है पतितों को पावन बनाना। बेहद का धोबी हो गया। अच्छा, बच्चों को .....